NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

शलजम की खेती से सम्बंधित जानकारी

विशाल पाल*[1], कुमारी नेहा सिन्हा[2] एवं मिथिलेश कुमार वर्मा[3]

परिचय:

शलजम (Turnip) एक महत्त्वपूर्ण शीतकालीन सब्जी है, जो जड़ वाली सब्जियों की श्रेणी में आती है। इसका वैज्ञानिक नाम *Brassica rapa* है और यह क्रूसिफेरी (Brassicaceae) कुल से संबंधित है। शलजम की जड़ का आकार गोल, चपटी या लम्बवत होता है, जिसका रंग सफेद, हल्का गुलाबी या बैंगनी छोर वाला भी पाया जाता है। यह पोषक तत्वों से भरपूर होने के साथ-साथ औषधीय गुणों से भी युक्त है। इसमें विटामिन 'ए', 'सी', कैल्शियम, फास्फोरस एवं आयरन भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं।

भारत में शलजम मुख्यतः उत्तर भारत के राज्यों जैसे उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बिहार और हिमाचल प्रदेश में उगाया जाता है। यह पौधा ठंडी जलवायु में अच्छी तरह बढ़ता है और किसानों के लिए कम अवधि वाली लाभकारी फसल है।

शलजम का आर्थिक महत्व

शलजम एक शीघ्र तैयार होने वाली सब्जी है, जो किसानों को अल्प समय में आय प्रदान करती है। इसका उपयोग सब्जी, अचार, सलाद और सूप के रूप में किया जाता है। इसकी कोमल पत्तियाँ भी हरी सब्जी के रूप में खाई जाती हैं। औद्योगिक स्तर पर शलजम का उपयोग निर्जलित सब्ज़ी बनाने में भी होता है।

जलवायु

शलजम ठंडी एवं आर्द्र जलवायु की फसल है। इसके लिए 10 से 20 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त रहता है। बहुत अधिक ठंड या पाला पड़ने से इसकी जड़ों की वृद्धि रुक जाती है। गर्मी की अधिकता में इसकी गुणवत्ता घट जाती है और जड़ कठोर एवं रेशेदार हो जाती है।

मृदा

शलजम की खेती के लिए दोमट या बलुई दोमट मिट्टी सर्वोत्तम होती है, जिसमें जलनिकास की अच्छी व्यवस्था हो। मिट्टी का pH मान 5.5 से 7.5 तक होना चाहिए। भारी मिट्टी में जड़ों का विकास सही ढंग से नहीं हो पाता और वे टेढ़ी-मेढ़ी बन जाती हैं।

किस्में

भारत में शलजम की कई उन्नत किस्में उपलब्ध हैं। कुछ प्रमुख किस्में इस प्रकार हैं:

1. **पूसा स्वाती** – सफेद रंग की जड़, जल्दी तैयार होने वाली।
2. **पूसा चितवन** – उच्च उपज क्षमता वाली, स्वादिष्ट।
3. **पूसा कानपुर टर्निप** – कोमल जड़ें, उत्तम स्वाद।
4. **जापानी व्हाइट** – गोल, मध्यम आकार की सफेद जड़ें।
5. **पंजाब टर्निप (सेलेक्शन)** – पंजाब और हरियाणा में लोकप्रिय।

विशाल पाल, कुमारी नेहा सिन्हा एवं मिथिलेश कुमार वर्मा*

[1]पीएच.डी. बागवानी विभाग (सब्ज़ी विज्ञान), (सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय)

[2]सहायक प्रोफेसर डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय

[3]पीएच.डी. बागवानी विभाग (सब्ज़ी विज्ञान), (सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय)

भूमि की तैयारी

भूमि को अच्छी तरह जोतकर भुरभुरी और समतल बना लेना चाहिए। 2–3 जुताई कर पाटा लगा देना चाहिए। खेत में गोबर की सड़ी हुई खाद या कम्पोस्ट 20–25 टन प्रति हेक्टेयर की दर से मिलाना चाहिए। खेत को क्यारियों में विभाजित कर उचित नालियाँ बना लेनी चाहिए ताकि सिंचाई व जलनिकास सुचारू रूप से हो सके।

बुवाई का समय

शलजम की बुवाई का सर्वोत्तम समय अक्टूबर से नवम्बर तक है। कुछ स्थानों पर इसकी शुरुआती बुवाई सितम्बर में भी की जाती है। देर से बुवाई करने पर जड़ें अच्छी गुणवत्ता की नहीं बन पातीं।

बीज दर एवं बुवाई की विधि

- बीज की मात्रा: 3–4 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पर्याप्त है।
- बीज उपचार: बुवाई से पूर्व बीज को 2–3 ग्राम *थिरम* या *कार्बेन्डाजिम* प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।
- बुवाई की विधि: बीज को कतारों में 30 सेमी की दूरी पर बोया जाता है। पौधे से पौधे की दूरी 7–10 सेमी रखनी चाहिए।

उर्वरक प्रबंधन

शलजम की अच्छी वृद्धि के लिए संतुलित पोषण आवश्यक है।

- गोबर की खाद: 20–25 टन/हेक्टेयर
- नाइट्रोजन: 60–80 किग्रा/हेक्टेयर
- फास्फोरस: 40–50 किग्रा/हेक्टेयर
- पोटाश: 40 किग्रा/हेक्टेयर

आधा नाइट्रोजन तथा पूरा फास्फोरस व पोटाश बुवाई के समय देना चाहिए। शेष नाइट्रोजन की खुराक 30 दिन बाद टॉप ड्रेसिंग के रूप में दी जाती है।

सिंचाई

शलजम की फसल में 5–6 सिंचाई पर्याप्त होती हैं। पहली सिंचाई बुवाई के तुरंत बाद हल्की देनी चाहिए। इसके बाद 10–12 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। अधिक सिंचाई से जड़ सड़ने की संभावना रहती है।

खरपतवार नियंत्रण

फसल में खरपतवार की अधिकता से उपज कम हो जाती है। बुवाई के 20–25 दिन बाद पहली निराई-गुड़ाई करनी चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर दूसरी निराई 40–45 दिन बाद करें। खरपतवार नियंत्रण हेतु *पेंडीमेथालिन* 1.0 किग्रा सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर बुवाई के बाद प्रयोग किया जा सकता है।

रोग और कीट प्रबंधन

1. **अल्टरनेरिया ब्लाइट** – पत्तियों पर भूरे धब्बे बन जाते हैं। नियंत्रण के लिए *मैनकोजेब* 0.2% का छिड़काव करें।
2. **डाउनी मिल्ड्यू** – पत्तियों के नीचे हल्के पीले धब्बे दिखाई देते हैं। नियंत्रण हेतु *मेटालेक्सिल + मैनकोजेब* का छिड़काव करें।
3. **एफिड्स (चेपा कीट)** – पत्तियों से रस चूसते हैं। नियंत्रण हेतु *इमिडाक्लोप्रिड* 0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

कटाई

बुवाई के 40–60 दिन बाद शलजम की फसल कटाई योग्य हो जाती है। जब जड़ का व्यास 5–10 सेमी

हो और वह कोमल अवस्था में हो, तभी उखाड़ लेना चाहिए। अधिक देर तक खेत में छोड़ने पर जड़ें सख्त और रेशेदार हो जाती हैं।

उपज

अच्छी देखभाल और उन्नत किस्मों से 250–300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त की जा सकती है।

भंडारण

शलजम को ताज़ा अवस्था में बेचना अधिक लाभकारी होता है। अल्प अवधि तक भंडारण के लिए इन्हें ठंडी एवं नम जगह पर रखा जा सकता है। लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए 0–2 डिग्री सेल्सियस तापमान और 90–95% आर्द्रता वाली कोल्ड स्टोरेज में रखा जाता है।

निष्कर्ष

शलजम की खेती किसानों के लिए अल्प समय में आय का अच्छा साधन है। यह कम लागत वाली फसल है, जो पोषण एवं औषधीय दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उन्नत किस्मों, उचित बुवाई समय, संतुलित खाद एवं कीट-रोग प्रबंधन से इसकी उपज एवं गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है। वर्तमान समय में बदलती जलवायु के बीच शलजम जैसी शीघ्र तैयार होने वाली सब्ज़ियों की खेती किसानों को आर्थिक रूप से लाभप्रद सिद्ध हो रही है।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE